SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय राजनीति के शिखर अटल बिहारी बाजपेयी

देवश्री भोयर
गुढ़ियारी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
देवश्री भोयर

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/11/2023
Revised on : -----
Accepted on : 09/11/2023
Plagiarism : 00% on 02/11/2023

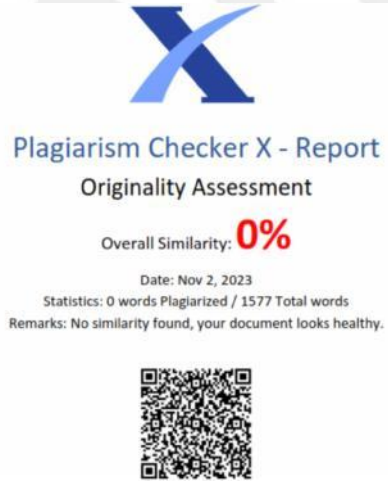

शोध सार

स्वतंत्र भारत में संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी अद्वितीय प्रधानमंत्री थे। इसी कारण उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिये। श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी का हमेशा प्रयास रहा है कि विपक्ष सक्षम हो जो सभी को साथ लेकर चल सके। इससे स्वस्थ लोकतंत्र का चित्र उद्घृत होना है। अटल जी अपने भाषा के माध्यम से संसद की कार्यवाही में चेतना प्रदान करने थे। अटल जी की विद्वता और वाकचार्तुयता इस बात से परिलक्षित होती है कि किसी की आलोचना करते वक्त उनकी गरिमा व प्रतिष्ठा का भी ध्यान रखते थे।

मुख्य शब्द

भारत, राजनीति, गरिमा, लोकतंत्र.

प्रस्तुत शोध आलेख में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के राजनितीक प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

श्री अटल जी की हस्तरेखांए विलक्षण थी। इनकी भाग्यरेखा चंद्रपर्वत से प्रारम्भ होकर सीधे हाथेली के छोर तक जाती थी, जो कि उनके नेतृत्व क्षमता की परिचायक तथा शासक होने की प्रबल सम्भावना को दर्शाती है। अटल जी एक महान नेता थे। भारत की गम्भीर और जटिल समस्याओं का हल निकालने की उनमें अद्वितीय क्षमता थी । आम जनमानस से सीधे सम्पर्क स्थापित करने का उनमें अत्यन्त गुण थे। भारत के लिए उनका गौरवशाली व्यक्तित्व अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। उनका जन्म इस देश पर शासक करने तथा भारत का कल्याण करने के लिए ही हुआ।

अटल जी को राजनीतिक जीवन की शुरूवात 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन से मानी जाती है। 1951

में जनसंघ की स्थापना के दौरान श्यामप्रसाद मुखर्जी एवं अन्य नेताओं के साथ उनकी भूमिका दिखाई पड़ती है। 1952 के प्रथम आम चुनाव में उनको सफलता नहीं मिली। 1957 में पहली बार उनको सफलता मिली। वाजपेयी जी के असाधारण व्यक्तित्व के कारण पंडित नेहरू ने वाजपेयी जी को भविष्य का प्रधान मंत्री के रूप में देखा। अप्रैल 1998 में प्रधान मंत्री पद का उत्तरदायित्व संभालते ही परमाणु कार्यक्रमों को हरी झण्ड़ी दी। 11 मई 1998 को पोखरण में दूसरा परमाणु सफल परिक्षण कर पूरे विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। इस सफल परिक्षण के उपरान्त भारत ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रासं और चीन की बराबरी करते हुए परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रो की सूची में अपना नाम दर्ज कर लिया। अमेरीका ने आर्थिक प्रतिबंध लगाने की बात कही, लेकिन राष्ट्रीय हित को ध्यान मे रखते हुए परीक्षण किया। पोखरण की घटना के विरोधस्वरूप अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपनी पूर्व निर्धारित यात्रा को स्थगित कर दिया। बाजपेयी जी विल क्लिंटन से तनिक भी विचलित नही हुए। इस विरोध और अंतराष्ट्रीय प्रतिबंधों के बावजूद मार्च 2000 में बिल क्लिंटन को भारत की राजकीय यात्रा के लिये विवश होना पड़ा। पोखरण परीक्षण के उपरांत अटल जी ने कहा था कि, "हममें से हर एक का मस्तक उस दिन ऊंचा हुआ, सीना चौड़ा हुआ, क्योकि उस दिन पोखरण में केवल अणु ऊर्जा का ही नही बल्कि राश्ट्र ऊर्जा का प्रकटीकरण हुआ था।

भारतीय दर्शन में कर्म सौंदर्य की उपासना को मानव धर्म की प्रतिष्ठा ही है। इस मामले में अटल जी ने 20वी सदी में कर्म उपासना को जो जीवन व्यतीत किया उससे श्रीमद्भगवत्गीता की उस उक्ति उद्धृत किया है कि जब मनुष्य खड़ा होती है, तो उसका कर्म और भाग्य, भविष्य को इंगित करता है।

इंसान जितनी तत्परता से कार्य में जुटता है, उसका कर्म भी उतना सक्रिय होकर भविष्य के सृजन में जुट जाता है। ऐसे कर्मयोगी अटलजी की निष्काम जीवनयात्रा उसी पड़ावों के गंतव्य तक सफलतापूर्वक पहुंच चूकी है। कुछ लोग चांदी के चम्मच लेकर पैदा होते हैं, उन्हे प्रसिद्धि विरासत में मिल जाती है लेकिन अटल जी ने अभावों से अपना जीवन आरंभ किया। मानवपीड़ा का उनसे बड़ा युगदृष्टा कदाचित ही दूसरा हो। यही कारण है कि ये आज राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय क्षितज पर शिखर को स्पर्श करते हुए भी जमीन पर एवं समाज के अंतिम पंक्ति पर खड़े व्यक्ति के पीड़ा की अनुभूति करते हुए उनका समाधान कर रहे। इसी पीड़ा ने कवि रूपी ह्रदय प्रदान किया और अंतस की पीड़ा कविता के रूप में निकलकर सामने आई।

अटल जी का शैशव, किशोरावस्था और व्यस्क जीवन उन संघर्षो की कहानी है जिसने मानव को बहुआयामी बनाया। उन्हें भारतीय लोकतंत्र का सामीप्य दिया और राष्ट्र की अहिमता को जगाने, सहजने और संवारने का पौरूष प्रदान किया। अटल जी का यदि मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाये तो उनके मानस में एक ऐसा विराट तत्व है, जहां राग, द्वेष, निजता जैसी कोई बात नहीं थी, बल्कि समग्रता है। श्रीकांत जोशी ने अपने लेख में लिखा है कि बाजपेयी जी भारत जैसे विशाल देश के एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने एक राजनेता या प्रधानमंत्री के रूप में नहीं, बल्कि क विशाल अंतःकरण वाले उदारभावना, सहिष्णुवृत्ति वाले संवेदनशील व्यक्तित्व थे।

सन् 1957 के द्वितीय लोकसभा चुनाव में संयुक्त महाराष्ट्र समिति के नेतृत्व में अधिकतर विपक्षी दलों ने संगठित होकर कांग्रेस के विरूद्ध चुनाव लड़ा, इस चुनाव में भारतीय जनसंघ भी सम्मिलित था। चुनाव प्रचार हेतु एक आमसभा आयोजित की गई थी जिसके लिए दीवारों पर पोस्टरों को चिपकाना, रास्तों पर चुना के माध्यम से कार्यक्रमों की सूचनाओं को बड़े अक्षरों में दीवार पर लिखना, इन सारे कार्यों को अटल जी बड़े ही उत्साह से करते थे। उनके ओजस्वी वक्तव्य से लोग उत्साहित हो जाते थे। अटल जी का उल्लेख भारत के भावी प्रधानमंत्री के रूप में 1957 में नहीं बल्कि पूरे 40 वर्षो बाद विराजमान होंगे और उनका यह स्वप्न सकार भी होने वाला था। आज हम देखते हैं कि अटल जी प्रधानमंत्री पद पर विराजमान ही नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष विश्वसंघ के मंच पर भी भारत का प्रभावी प्रतिनिधित्व करके एक विश्व नेता के रूप में उभर रहे थे। गोयल ने अपने लेख में लिखा कि सन् 1962 में चीन के आक्रमण के दौरान देश के लिए चीनियों से संघर्ष करते शहीद हो गये। जवानों सैन्य अधिकारियों पर जब मैंने ''हिमालय के प्रहरी'' पुस्तक लिखी तो अटल जी के प्रेरणा पर ही मैं उनकी भूमिका लिखवाने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के पास गया था। गुप्त जी की भूमिका को पढ़कर अटल जी ने कहा था, गोयल जी आपकी यह छोटी सी

पुस्तक राष्ट्रकवि की भूमिका के कारण अमर हो गयी है। अटल जी भारतीय संस्कृति सभ्यता, धर्म दर्शन और मानवता के पोशक सभी प्राण तत्वों के मूल धन थे। उन्होने अपना जीवन, तन–मन, लौकिक और मौलिक संवेदना में अपना प्रेम, श्रद्धा, अपनी व्यक्तिगत इच्छाएं, आकांक्षाएं सब कुछ राष्ट्र को समर्पित कर दी।

डॉ. भाई महावीर ने अपने लेख में लिखा है कि लोकतंत्र में विपक्ष को भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विपक्ष में रहते हुए अटल जी रचनात्मक आलोचना के हिमायती थे। रचनात्मक दृष्टिकोण तभी संभव है, जब व्यक्ति में गहन अध्ययन सभ्यता और संस्कृति के अंतरंग स्वरूप से सुपरिचित हो। सन् 1998 में प्रथम बार 13 दिन के लिये प्रधानमंत्री बनने तथा 1999 में मात्र 1 वोट से सरकार गिरने जैसी स्थिति में भी वे स्वयं विचलित नहीं हुए, और न ही पार्टी के सदस्यों को हार के कारण दुःखी व हतप्रभ होने दिया। उन क्षणों में अटल जी उदास जरूर थे, पर हताश नहीं, यह तभी संभव है जब व्यक्ति में आत्मबल हो एवं अपने आप में पूर्ण विश्वास हों। पहली बार आम आदमी के इस दर्द को महसूस किया, ठेला चलाने वाला व्यक्ति भी अटल जी जैसे योग्य व्यक्ति की सरकार का इस तरह से गिरना नहीं देखना चाहता था। उन्होंने कहा, अपने अल्पमत को बहुमत में बदलने के लिए मैने कोई गलत काम नहीं किया। सदस्यों के क्रय–विक्रय का तो सवाल ही नहीं उठता। सत्ता की चादर को मैंने 13 दिन बाद बेदाग वापस रख दिया। इसी बात के लिए विराधी नेताओं ने भी सदन में प्रशंसा की। सरकार गिर गई, किन्तु उन्होने हार नहीं मानी। उनकी लाहौर बस मात्र निश्चित ही पड़ोसी देश के प्रति मित्रता व्यवहार को अपेक्षा से शुरू की गई थी, लेकिन पड़ोसी देश द्वारा धोखा दिए जाने पर उनका माकूल जवाब देना और कारगिल विजय के द्वारा यह सिद्ध कर देना कि हम मित्रता चाहते थे। अटल जी ने पत्रकारिता कविता राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया किन्तु कभी उन पर हावी नही हो पाया उन्होने हर क्षेत्र में पूर्णता को प्राप्त कर लिया था। उनका जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित था, राजनीति में गये तो वहां भी निराली छाप छोड़ी। अटल जी प्रधानमंत्री बनने के उपरान्त भी जिस कुशलता गंभीरता से सभी को साथ लेकर चलने थे, यह किसी अन्य के बस की बात नही थी।

कैलाश जोशी ने अपने लेख ''विश्वमत राजनेता अटलजी'' में लिखा हैं कि जब मुझे नगरपालिका के चुनाव प्रचार हेतु निर्देश मिला था तब एक दिन के लिये अटलजी प्रचार हेतु आए थे। आमसभा में अटलजी का अत्यंत ओजस्वी भाषण हुआ था। उन्होंने कहा कि ''नगरपालिका संसदीय कार्यप्रणाली की प्रथम पाठशाला है। अतः राजनीति और प्रशासकीय कार्यो का अध्ययन करके प्रगति करने का भरपूर प्रयास किया जाना चाहिए।''

निष्कर्ष

अटल जी ने नेहरू जी के उदारता को स्वयं ही स्वीकार ही नहीं किया, बल्कि उनका सम्मान भी किया। जनता पार्टी की सभा में वो विदेश मंत्री थे। उनके कर्मचारियों ने अटल जी की तस्वीर हटा दी तो इससे अटल जी काफी नाराज ही गये वापस तस्वीर लगाने को कहां। जब संसद पर हमला हुआ तो विपक्ष की नेता सोनिया गांधी ने ही फोन लगाकर उनसे कुशलक्षेम पुछा था क्योंकि देश के प्रधानमंत्री होने के नाते उनकी सुरक्षा सर्वोपरी है। भारतीय लोकतंत्र की यह खुबसुरती है कि राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, किन्तु मनभेद नहीं। अटल जी ऐसे नेता थे जिन्हे लोग प्रधानमंत्री या राजनेता के रूप में ही महान नहीं मानते, बल्कि एक विशाल अतःकरण वाले उदार सहिष्णुवृत्ति वाले मानवतावादी कवि भी माने जाते हैं। अटल जी का देशप्रेम सदैव स्मरणीय रहेगा।

संदर्भ सूची

1. ''द अनटोल्ड बाजपेयी पॉलिटिशियन एण्ड पाराडॉक्स'' एनपी उल्लेख।
2. जोशी कैलाश, (2015) *''हमारे अटलजी''*, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जोशी कैलाश, (2015) *''सोनिया ए बायोग्राफी''*, प्रकाशक प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. www.BBC.org
5. www.BJP.org

****